REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF)
VOLUME - 15 | ISSUE - 4 | JANUARY - 2026

कृषि पर पशुओं द्वारा पड़ने वाले प्रभाव का विश्लेषणात्मक अध्ययन (मऊगंज जिले के विशेष सन्दर्भ में)

दिब्यंत द्विवेदी
शोधार्थी भूगोल
शासकीय ठाकुर रणमत सिंह महाविद्यालय, रीवा (म.प्र.)

डॉ. दीपेन्द्र तिवारी
सहायक प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष, भूगोल
शासकीय स्वामी विवेकानन्द महाविद्यालय त्योंथर रीवा (म.प्र.)

सारांश :

कृषि भारतीय ग्रामीण अर्थव्यवस्था की रीढ़ है, किंतु हाल के वर्षों में वन्य एवं आवारा पशुओं द्वारा फसलों को होने वाली क्षति किसानों के लिए गंभीर समस्या बनती जा रही है। विशेषतः मध्यप्रदेश के मऊगंज जिले में नीलगाय, जंगली सूअर, बंदर तथा आवारा गोवंश द्वारा कृषि भूमि को निरंतर नुकसान पहुँचाया जा रहा है। इस अध्ययन का उद्देश्य इन पशुओं के कारण होने वाले कृषि नुकसान का आकलन करना, प्रभावित फसलों की पहचान करना तथा किसानों द्वारा अपनाई जा रही पारंपरिक एवं आधुनिक रोकथाम विधियों का विश्लेषण करना है। अध्ययन क्षेत्र में प्राथमिक सर्वेक्षण, प्रश्नावली, साक्षात्कार तथा फसल–क्षति के प्रत्यक्ष निरीक्षण के माध्यम से आँकड़े संकलित किए गए। परिणामों से ज्ञात हुआ कि रबी एवं खरीफ दोनों मौसमों में फसल क्षति की तीव्रता अधिक है तथा यह किसानों की आय, खाद्य सुरक्षा और मानसिक स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव डाल रही है।

मुख्य शब्द : मऊगंज, किसान, आवारा पशु, कृषि, चुनौतियाँ, फसल सुरक्षा एवं ग्रामीण।

प्रस्तवना :

भारत की अर्थव्यवस्था में कृषि का केंद्रीय स्थान है और ग्रामीण जनसंख्या का अधिकांश भाग अपनी आजीविका के लिए खेती पर निर्भर है। किंतु वर्तमान समय में कृषि क्षेत्र अनेक चुनौतियों से घिरा हुआ है, जिनमें से एक प्रमुख समस्या वन्य एवं आवारा पशुओं द्वारा फसलों को होने वाली क्षति है। मानव आबादी में तीव्र वृद्धि, वन क्षेत्रों का सिकुड़ना, चरागाहों की कमी, शहरीकरण तथा परिवर्तित भूमि उपयोग पैटर्न ने मानव और वन्यजीवों के बीच संपर्क को बढ़ा दिया है। इसके परिणामस्वरूप कृषि भूमि अब संघर्ष के प्रमुख केंद्र बनती जा रही है। मध्यप्रदेश का मऊगंज जिला, जो विंध्य क्षेत्र के अंतर्गत आता है, कृषि और वन क्षेत्र के पारस्परिक संपर्क का उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत करता है। यहाँ नीलगाय, जंगली सूअर, बंदर तथा आवारा गोवंश जैसी प्रजातियाँ प्रमुख रूप से कृषि को प्रभावित करती हैं। रबी और खरीफ दोनों फसल चक्रों में होने वाला नुकसान किसानों की आर्थिक स्थिति को कमजोर करता है तथा खाद्य सुरक्षा, ऋण निर्भरता और सामाजिक तनाव जैसी समस्याओं को जन्म देता है। कई स्थानों पर किसान रात्रि जागरण, अस्थायी बाड़बंदी और पारंपरिक उपायों पर निर्भर हैं, जो दीर्घकालीन समाधान सिद्ध नहीं हो पा रहे हैं।

मानव–वन्यजीव संघर्ष से संबंधित अध्ययन भारत के विभिन्न भागों में किए गए हैं, किंतु मऊगंज जिले के स्तर पर कृषि हानि का व्यवस्थित और क्षेत्र विशिष्ट वैज्ञानिक विश्लेषण सीमित है। इस प्रकार की स्थिति में स्थानीय आँकड़ों पर आधारित अध्ययन न केवल समस्या की वास्तविक गंभीरता को उजागर करेगा, बल्कि क्षेत्रीय योजना निर्माण और नीति–निर्धारण के लिए भी उपयोगी सिद्ध होगा।

प्रस्तुत शोध का उद्देश्य मऊगंज जिले में पशुओं द्वारा कृषि पर पड़ने वाले प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष प्रभावों का विश्लेषण करना, प्रभावित फसलों की पहचान करना, किसानों द्वारा अपनाए जा रहे रोकथाम उपायों का मूल्यांकन करना तथा सतत एवं व्यावहारिक समाधान सुझाना है। यह अध्ययन कृषि विज्ञान, पर्यावरण संरक्षण तथा ग्रामीण विकास के मध्य संतुलन स्थापित करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण प्रयास है। इनमें से एक प्रमुख चुनौती आवारा पशुओं द्वारा फसलों की क्षति है। खेतों में जुताई, बुवाई और फसल की रखवाली करते समय किसानों को अब केवल प्राकृतिक विपदाओं से ही नहीं, बल्कि आवारा मवेशियों से भी संघर्ष करना पड़ता है। मऊगंज जिले के ग्रामीण अंचलों में यह समस्या दिन–प्रतिदिन गंभीर होती जा रही है। कई बार आवारा पशु रात में खेतों में घुसकर पूरी फसल चर जाते हैं, जिससे किसान को भारी आर्थिक नुकसान होता है। यही कारण है कि किसान दिन में मेहनत करने के बाद भी रात में अपने खेतों की रखवाली के लिए जागते रहते हैं। कई किसान छोटे–छोटे मचान बनाकर ठंडी हवाओं और सर्द तापमान के बीच पूरी रात खेतों की निगरानी करते हैं। जब तापमान 2 से 3 डिग्री तक गिर जाता है, तब भी किसान 3–4 बजे तक जागकर फसल को बचाने का प्रयास करते हैं।

भारतीय ग्रामीण तथा शहरी परिवेश में आवारा पशुओं की समस्या दिन प्रतिदिन गंभीर होती जा रही है। विशेषकर कृषि प्रधान राज्यों में यह समस्या न केवल उत्पादकता, आय और स्वरोज़गार को प्रभावित कर रही है, बल्कि सामाजिक संरचना, सुरक्षा, स्वास्थ्य और आर्थिक स्थिरता पर भी गहरा प्रभाव डाल रही है। पशुपालकों द्वारा अनुपयोगी या पालन में कठिनाई वाले पशुओं को छोड़ देना, चरागाह भूमि का घट जाना, पशु आश्रय केंद्रों की कमी तथा सरकारी नियंत्रण का अभाव इस समस्या को और विकट बनाते जा रहे हैं। इसके परिणामस्वरूप कृषि उत्पादन में कमी, सामाजिक असुरक्षा तथा ग्रामीण–शहरी जीवन में अराजकता स्पष्ट रूप से दिखाई देती है।

कृषि केवल जीविका का साधन नहीं, बल्कि ग्रामीण जीवन की आत्मा है। जब किसान रातभर खेतों की रखवाली करता है, तो उसकी सेहत, पारिवारिक जीवन और मानसिक स्थिति पर भी असर पड़ता है। मऊगंज जिले में यह स्थिति विशेष रूप से देखी जाती है कि किसान खेत में ही खाना खाकर वहीं विश्राम कर लेते हैं। परिवार के अन्य सदस्य भी इस कार्य में सहयोग करते हैं।

कृषि में बढ़ती चुनौतियों के कारण कुछ किसान अब वैकल्पिक आजीविका की ओर रुख कर रहे हैं, जैसे मजदूरी, व्यापार या सरकारी योजनाओं में भागीदारी। परंतु कृषि से उनका जुड़ाव आज भी अटूट है। यह स्थिति स्पष्ट रूप से दर्शाती है कि मऊगंज का किसान केवल भूमि से नहीं, बल्कि अपनी पहचान और अस्तित्व से भी गहराई से जुड़ा है।

उद्देश्य:

इस शोध के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित हैं:

- मऊगंज जिले में कृषि क्षति उत्पन्न करने वाले प्रमुख पशुओं की पहचान करना।
- विभिन्न फसलों पर होने वाले नुकसान की मात्रा का आकलन करना।
- किसानों पर पड़ने वाले आर्थिक एवं सामाजिक प्रभावों का विश्लेषण करना।
- किसानों द्वारा अपनाए जा रहे सुरक्षा उपायों की प्रभावशीलता का मूल्यांकन करना।
- दीर्घकालिक प्रबंधन एवं नीति–संबंधी सुझाव प्रस्तुत करना।

सामग्री एवं विधियाँ :

अध्ययन के लिए मऊगंज जिले के कृषि वन सीमा से सटे दस ग्रामों का उद्देश्यपूर्ण चयन किया गया, जहाँ पशुओं द्वारा फसल क्षति की घटनाएँ अपेक्षाकृत अधिक पाई जाती हैं। प्राथमिक आँकड़ों के संकलन हेतु कुल 150 किसानों से संरचित प्रश्नावली के माध्यम से साक्षात्कार किए गए, जिसमें फसल प्रकार, क्षति की मात्रा,

पशु प्रजाति, मौसमीय भिन्नता, तथा अपनाए गए सुरक्षा उपायों से संबंधित प्रश्न शामिल थे। इसके अतिरिक्त, शोधकर्ताओं द्वारा चयनित खेतों में प्रत्यक्ष भ्रमण कर फसल क्षति के स्वरूप का अवलोकन किया गया तथा ग्राम सभाओं और कृषक समूह बैठकों के माध्यम से सामूहिक चर्चा कर स्थानीय अनुभवों और धारणाओं को अभिलेखित किया गया।

द्वितीयक आँकड़ों के स्रोत के रूप में वन विभाग से प्राप्त अभिलेखों का उपयोग किया गया, जिनमें पशु गतिविधि, क्षतिपूर्ति दावों और संघर्ष की घटनाओं से संबंधित विवरण सम्मिलित थे। साथ ही, राजस्व विभाग के अभिलेखों से ग्राम स्तरीय भूमि–उपयोग, फसल क्षेत्रफल और उत्पादन से जुड़े आँकड़े संकलित किए गए, जिससे प्राथमिक आँकड़ों की पुष्टि एवं तुलनात्मक विश्लेषण संभव हो सका। इन विभिन्न स्रोतों से प्राप्त जानकारी को एकीकृत कर अध्ययन क्षेत्र में कृषि क्षति की व्यापकता और स्थानिक वितरण का सम्यक् चित्र तैयार किया गया।

संकलित आँकड़ों के विश्लेषण हेतु वर्णनात्मक सांख्यिकी विधियों जैसे प्रतिशत वितरण, औसत एवं श्रेणी वर्गीकरण का प्रयोग किया गया तथा विभिन्न पशु प्रजातियों और फसल प्रकारों के मध्य क्षति के स्तर की तुलना तुलनात्मक तालिकाओं के माध्यम से की गई। स्थानिक प्रवृत्तियों को समझने के लिए मानचित्रण अपनाया गया, जिसके द्वारा उच्च जोखिम वाले ग्रामों और खेत खंडों की पहचान की गई। इस प्रकार, मात्रात्मक एवं गुणात्मक दोनों प्रकार की विश्लेषण तकनीकों के समन्वय से अध्ययन के निष्कर्षों को अधिक विश्वसनीय और व्यावहारिक बनाया गया।

मऊगंज जिले का भौगोलिक परिचय :

मऊगंज जिला की भौगोलिक स्थित $24^0.68'$ उत्तरीय अक्षांश तथा $81^0.88'$ से पूर्वी देशान्तर तक हुआ हैं। यह समुन्द्र तल से 313 मीटर की ऊँचाई पर बसा हुआ हैं। मऊगंज जिला मध्यप्रदेश के उत्तर–पूर्वी भाग में स्थित है। यह रीवा संभाग का एक नवगठित जिला है, जो ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और कृषि दृष्टि से महत्वपूर्ण है। इसके उत्तर में उत्तर प्रदेश का सोनभद्र जिला, पूर्व में सिंगरौली, दक्षिण, पश्चिममें रीवा जिले की सीमाएँ मिलती हैं। जिले का भूभाग अधिकांशतः पठारी और आंशिक रूप से मैदानी है। यहाँ की जलवायु उष्णकटिबंधीय प्रकार की है : गर्मियों में तापमान 42% तक पहुँच जाता है और सर्दियों में 4% तक गिर जाता है। औसत वार्षिक वर्षा लगभग 1000–1100 मि.मी. है। मऊगंज जिले के प्रमुख नदियाँ सेलर, जो सिंचाई में योगदान देती हैं। कृषि भूमि के प्रकार में काली, दोमट और लाल मिट्टी का मिश्रण पाया जाता है। यह मिट्टी धान, गेहूं, दलहन और तिलहन फसलों के लिए उपयुक्त है। लेकिन आवारा पशुओं की बढ़ती संख्या, सिंचाई की सीमाएँ और कृषि लागत में वृद्धि किसानों के लिए गंभीर चुनौतियाँ प्रस्तुत करती हैं।

परिणाम:

प्रस्तुत अध्ययन में मऊगंज जिले के चयनित ग्रामों से प्राप्त आँकड़ों के आधार पर पशुओं द्वारा कृषि पर पड़ने वाले प्रभावों का पशु प्रजातिवार एवं फसलवार विश्लेषण किया गया। प्राथमिक सर्वेक्षण और क्षेत्रीय अवलोकन से संकलित जानकारी को संख्यात्मक रूप में सारणीबद्ध किया गया तथा उसके पश्चात विस्तृत विवेचन प्रस्तुत किया गया।

तालिका 1: विभिन्न पशुओं द्वारा फसलों को होने वाली क्षति (%)

पशु प्रजाति	प्रभावित किसान (%)	औसत फसल क्षति (%)
नीलगाय	45	28
जंगली सूअर	32	35
बंदर	18	15
आवारा गोवंश	40	22
खरगोश व अन्य	10	8

तालिका–1 से स्पष्ट होता है कि नीलगाय द्वारा सर्वाधिक किसानों की फसलें प्रभावित हुईं (45 प्रतिशत), जबकि जंगली सूअर द्वारा की गई औसत क्षति (35 प्रतिशत) सभी पशु–प्रजातियों में सबसे अधिक रही। इससे संकेत मिलता है कि यद्यपि जंगली सूअर कम खेतों में प्रवेश करते हैं, किंतु वे अल्प समय में व्यापक नुकसान पहुँचा सकते हैं। आवारा गोवंश से 40 प्रतिशत किसान प्रभावित पाए गए, जिनसे औसतन 22 प्रतिशत फसल क्षति दर्ज की गई। बंदरों का प्रभाव विशेष रूप से सब्जियों एवं बागवानी फसलों पर केंद्रित रहा, जहाँ 18 प्रतिशत किसानों ने नुकसान की सूचना दी। खरगोश एवं अन्य छोटे स्तनधारियों से होने वाली क्षति तुलनात्मक रूप से कम रही, परंतु वन सीमा से सटे खेतों में इनका प्रभाव स्पष्ट रूप से देखा गया।

तालिका 2: सर्वाधिक प्रभावित फसलें

फसल	प्रभावित क्षेत्र (:)
गेहूँ	38
चना	24
धान	20
सरसों	12
सब्जियाँ	6

तालिका–2 के अनुसार गेहूँ अध्ययन क्षेत्र की सर्वाधिक प्रभावित फसल रही, जिसमें 38 प्रतिशत कृषि क्षेत्र पर पशुओं का प्रभाव दर्ज किया गया। इसके बाद चना (24 प्रतिशत) और धान (20 प्रतिशत) क्रमशः दूसरे और तीसरे स्थान पर रहे। गेहूँ एवं चना पर नीलगाय और जंगली सूअर द्वारा अपेक्षाकृत अधिक नुकसान किया गया, जबकि धान के खेतों में जंगली सूअर तथा आवारा गोवंश की गतिविधियाँ प्रमुख रहीं। सरसों अपेक्षाकृत कम प्रभावित पाई गई, संभवतः इसकी तीव्र गंध एवं स्वाद कुछ पशुओं को कम आकर्षित करता है। सब्जियों का क्षेत्रफल सीमित होने के बावजूद उनमें क्षति तीव्रता से हुई, विशेषतः बंदरों एवं आवारा पशुओं द्वारा।

दोनों तालिकाओं के संयुक्त विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि मऊगंज जिले में कृषि–क्षति का स्वरूप बहुआयामी है, जिसमें नीलगाय, जंगली सूअर तथा आवारा गोवंश प्रमुख भूमिका निभाते हैं। फसल–प्रकार, मौसम तथा वन क्षेत्रों से निकटता जैसे कारक क्षति की तीव्रता को प्रभावित करते हैं। जिन ग्रामों की कृषि भूमि वन सीमा के समीप स्थित थी, वहाँ गेहूँ, चना एवं धान जैसी फसलों में अधिक नुकसान दर्ज किया गया। इस प्रकार, तालिकाओं से प्राप्त आँकड़े यह संकेत देते हैं कि कृषि–क्षति केवल जैविक समस्या न होकर सामाजिक आर्थिक चुनौती भी है, जिसके समाधान के लिए क्षेत्र विशिष्ट रणनीतियों और वैज्ञानिक प्रबंधन उपायों की आवश्यकता है।

विश्लेषण :

प्रस्तुत अध्ययन के परिणाम यह स्पष्ट करते हैं कि मऊगंज जिले में पशुओं द्वारा कृषि पर पड़ने वाला प्रभाव एक गंभीर, बहुआयामी और निरंतर बढ़ती हुई समस्या है। पशु प्रजातिवार तथा फसलवार विश्लेषण से यह ज्ञात हुआ कि नीलगाय, जंगली सूअर और आवारा गोवंश मुख्य रूप से कृषि क्षति के लिए उत्तरदायी हैं, जबकि बंदर और छोटे स्तनधारी जीव कुछ विशिष्ट क्षेत्रों और फसलों तक सीमित प्रभाव डालते हैं। यह अनुभाग प्राप्त निष्कर्षों की तुलना पूर्ववर्ती अध्ययनों से करता है, उनके पारिस्थितिक कारणों की विवेचना करता है तथा सामाजिक आर्थिक और प्रबंधन संबंधी पहलुओं पर प्रकाश डालता है।

पशु–प्रजाति आधारित प्रवृत्तियों की विवेचना:

जंगली सूअर द्वारा औसतन 35 प्रतिशत तक फसल क्षति दर्ज होना इस बात का संकेत है कि यह प्रजाति अध्ययन क्षेत्र में मानव कृषि तंत्र के लिए सबसे अधिक विनाशकारी सिद्ध हो रही है। जंगली सूअर की सर्वाहारी प्रवृत्ति, समूहों में विचरण तथा रात के समय खेतों में प्रवेश करने की क्षमता उसे अधिक प्रभावी बनाती है। पूर्ववर्ती अध्ययनों में भी इसे मध्य भारत के अनेक भागों में प्रमुख फसल नाशक प्रजाति बताया गया है, जिससे वर्तमान शोध के निष्कर्षों को व्यापक क्षेत्रीय संदर्भ मिलता है। नीलगाय द्वारा 45 प्रतिशत किसानों को

प्रभावित किया जाना यह दर्शाता है कि इनकी संख्या और विस्तारशील आवास सीमा कृषि पर व्यापक दबाव डाल रही है। नीलगाय मुख्यतः दलहनी और तिलहनी फसलों को प्राथमिकता देती हैं, जो मऊगंज क्षेत्र में व्यापक रूप से उगाई जाती हैं। आवारा गोवंश द्वारा होने वाली क्षति भूमि उपयोग परिवर्तन, चरागाहों की कमी और शहरी ग्रामीण संक्रमण क्षेत्रों में पशुपालन प्रणालियों के क्षरण से जुड़ी प्रतीत होती है।

फसल–वार संवेदनशीलता और कृषक व्यवहार:

गेहूँ, चना और धान का सर्वाधिक प्रभावित होना इस तथ्य को रेखांकित करता है कि उच्च उत्पादन वाली और पोषण समृद्ध फसलें पशुओं के लिए आकर्षण का केंद्र बन जाती हैं। कई किसानों ने साक्षात्कार के दौरान यह भी बताया कि वे अब कुछ पारंपरिक फसलों की बुवाई कम कर रहे हैं या फसल चक्र में परिवर्तन कर रहे हैं, जिससे दीर्घकाल में कृषि विविधता पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ सकता है। सरसों का अपेक्षाकृत कम प्रभावित होना संभावित रूप से उसकी तीव्र गंध और स्वाद के कारण है, जैसा कि अन्य क्षेत्रों में भी रिपोर्ट किया गया है। सब्जियों में होने वाली अधिक तीव्र क्षति यह संकेत देती है कि छोटे पैमाने की बागवानी गतिविधियाँ विशेष रूप से संवेदनशील हैं और इससे ग्रामीण पोषण सुरक्षा पर अप्रत्यक्ष प्रभाव पड़ सकता है।

मौसमी और स्थानिक कारक :

मौसमी विश्लेषण से यह ज्ञात हुआ कि रबी मौसम में पशुओं की गतिविधियाँ अधिक तीव्र रहती हैं, संभवतः इस अवधि में प्राकृतिक वन–आहार की उपलब्धता कम होने के कारण। कटाई के पूर्व चरण में होने वाली अधिक क्षति किसानों की आर्थिक हानि को और बढ़ा देती है, क्योंकि उस समय तक अधिकांश लागत पहले ही वहन की जा चुकी होती है। मानचित्रण से पहचाने गए उच्च–जोखिम क्षेत्र यह दर्शाते हैं कि वन–सीमा, नालों और परित्यक्त भूमि के समीप स्थित खेत पशुओं के प्रवेश के लिए प्राकृतिक गलियारे का कार्य करते हैं। जिन ग्रामों में सामुदायिक बाड़बंदी या सक्रिय निगरानी समितियाँ थीं, वहाँ क्षति का स्तर अपेक्षाकृत कम पाया गया, जिससे सामुदायिक भागीदारी की उपयोगिता सिद्ध होती है।

सामाजिक–आर्थिक प्रभाव :

कृषि–क्षति का प्रभाव केवल उत्पादन तक सीमित नहीं रहता, बल्कि यह किसानों की आजीविका, ऋण निर्भरता और मानसिक तनाव को भी प्रभावित करता है। छोटे और सीमांत किसानों पर इसका बोझ अधिक पड़ता है, क्योंकि उनके पास वैकल्पिक आय–स्रोत सीमित होते हैं। कई उत्तरदाताओं ने यह भी व्यक्त किया कि निरंतर नुकसान के कारण युवा पीढ़ी कृषि कार्य से विमुख हो रही है, जो ग्रामीण सामाजिक संरचना में दीर्घकालिक परिवर्तन का संकेत देता है। मुआवजा योजनाओं की जटिल प्रक्रियाएँ और विलंब भी किसानों में असंतोष को बढ़ाते हैं। यह स्थिति कभी–कभी वन्यजीव संरक्षण के प्रति नकारात्मक दृष्टिकोण को जन्म दे सकती है, जिससे संरक्षण और आजीविका के बीच संतुलन स्थापित करने की चुनौती और गंभीर हो जाती है।

रोकथाम उपायों की प्रभावशीलता :

अध्ययन क्षेत्र में किसानों द्वारा अपनाए गए पारंपरिक उपायकृजैसे रात में पहरा, शोर उत्पन्न करना, काँटेदार झाड़ियाँ लगाना और अस्थायी बाड़ अल्पकालिक राहत प्रदान करते हैं, किंतु दीर्घकालीन समाधान नहीं हैं। कुछ ग्रामों में विद्युत चालित बाड़ और सौर ऊर्जा आधारित प्रकाश प्रणालियों के प्रयोग से सकारात्मक परिणाम मिले, किंतु इनकी उच्च लागत छोटे किसानों के लिए बाधा बनी हुई है। फसल–बीमा, शीघ्र मुआवजा भुगतान, सामुदायिक बाड़बंदी, और वन–कृषि समन्वय समितियों जैसे संस्थागत उपायों की आवश्यकता इस अध्ययन द्वारा विशेष रूप से रेखांकित की गई है।

नीति–निहितार्थ और तुलनात्मक परिप्रेक्ष्य :

अन्य भारतीय राज्यों में किए गए अध्ययनों से तुलना करने पर यह स्पष्ट होता है कि मऊगंज जिले की स्थिति कोई अपवाद नहीं है, बल्कि यह एक व्यापक राष्ट्रीय प्रवृत्ति का हिस्सा है। इससे संकेत मिलता है कि स्थानीय समाधान के साथ–साथ राज्य और राष्ट्रीय स्तर पर समन्वित नीति–निर्माण आवश्यक है।

निष्कर्ष :

प्रस्तुत अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि मऊगंज जिले में पशुओं द्वारा कृषि पर पड़ने वाला प्रभाव केवल एक स्थानीय या मौसमी समस्या न होकर एक गंभीर सामाजिक आर्थिक तथा पर्यावरणीय चुनौती बन चुका है। सर्वेक्षण, क्षेत्रीय अवलोकन तथा सांख्यिकीय विश्लेषण के आधार पर यह पाया गया कि नीलगाय, जंगली सूअर और आवारा गोवंश प्रमुख रूप से फसल क्षति के लिए उत्तरदायी हैं, जबकि बंदर और छोटे स्तनधारी जीव कुछ विशिष्ट फसलों और क्षेत्रों तक सीमित प्रभाव डालते हैं। फसल–वार विश्लेषण से यह भी स्पष्ट हुआ कि गेहूँ, चना और धान जैसी प्रमुख खाद्यान्न फसलें सर्वाधिक प्रभावित होती हैं, जिससे किसानों की कुल उत्पादन क्षमता में उल्लेखनीय कमी आती है। यह नुकसान विशेष रूप से छोटे और सीमांत किसानों के लिए अधिक गंभीर सिद्ध होता है, जिनकी आजीविका पूर्णतः कृषि पर निर्भर रहती है। बार–बार होने वाली क्षति किसानों को फसल–चक्र में परिवर्तन, जोखिमपूर्ण खेती छोड़ने अथवा वैकल्पिक आजीविका अपनाने के लिए विवश कर सकती है, जिससे दीर्घकाल में क्षेत्र की कृषि संरचना और ग्रामीण अर्थव्यवस्था प्रभावित होने की संभावना है। अध्ययन से यह भी निष्कर्ष निकलता है कि मौजूदा रोकथाम उपायकृजैसे रात्रि–निगरानी, अस्थायी बाड़बंदी और पारंपरिक डराने की तकनीकें अल्पकालिक राहत तो देती हैं, किंतु स्थायी समाधान प्रदान करने में सक्षम नहीं हैं। इसके विपरीत, जहाँ सामुदायिक सहभागिता, संगठित निगरानी व्यवस्था तथा तकनीकी उपायों का प्रयोग किया गया, वहाँ अपेक्षाकृत कम क्षति दर्ज की गई। इससे यह संकेत मिलता है कि समस्या के समाधान के लिए व्यक्तिगत प्रयासों के स्थान पर सामूहिक और संस्थागत रणनीतियाँ अधिक प्रभावी हो सकती हैं।

संदर्भ–सूची:

1. कुमार, प्रमिला एवं श्री कमल शर्मा – कृषि भगोल, मध्य प्रदेश ग्रन्थ अकादमी, भोपाल, चतुर्थ संस्करण, 1966
2. कुमार, प्रमिला (1977) म.प्र. एक भौगोलिक अध्ययन द्वितीय संस्करण।
3. म०प्र० सामान्य ज्ञान, जैन एंव डॉ सोलकी, आकार प्रकाशन आगरा, पृष्ठ 20
4. तिवारी, आर.सी. एवं सिंह वी.एन. कृषि भूगोल, प्रवालिका पब्लिकेशन्स प्रयागराज, 2023 पृ. 295,304
5 शर्मा, बी.एल. : कृषि भूगोल, साहित्य भवन, भवन, आगरा, 1988 पृ. 295
6. डॉ. मामोरिया एवं डॉ. जोशी, पर्यावरण अध्ययन, साहित्य भवन पब्लिकेशन आगरा सन् 2014, पृ.सं. 310
7. चतुर्भुज, डॉ. मामोरिया– भारत की आर्थिक समस्याएँ, साहित्य भवन पब्लिकेशन एण्ड डिस्ट्रीब्यूट्रस, 2010–11.
8. अलका, गौतम–कृषि भूगोल, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद 2009, पृ. 435
9. सिंह सविन्द, पर्यावरण भूगोल, प्रयाग पुस्तक भवन, प्रयागराज सन् 2021 पृ. सं. 480–485
10. हुसैन माजिद, ''कृषि भूगोल'', रावत पब्लिकेशन, नई दिल्ली 2008 पृ. 107–110